2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए—1 × 5 = 5

"वीर अपनी बात के पक्के होते हैं, अपनी धुन के पक्के होते हैं, अपने निश्चय के पक्के होते हैं। वे लीक पर नहीं चलते, उनके बनाए मार्ग दूसरों के लिए लीक बनते हैं। वीरता उनके स्वरूप से नहीं, उनके मन, आचरण और कर्म से झलकती है। वीरों को बनाने के कारखाने नहीं हो सकते। वे तो देवदार के वृक्षों की भाँति जीवन के जंगल में स्वयं जन्म लेते हैं और बिना किसी के हाथ लगाए तैयार होते हैं। वे दुनिया के सामने अचानक आकर खड़े हो जाते हैं। उनका भरण-पोषण और संवर्धन प्रकृति करती है। वे परमुखापेक्षी नहीं होते। उनके सारे गुण उनके भीतर ही होते हैं। बाहर से दिखाने के लिए उनके पास कुछ नहीं होता। असली वीर, लोगों की प्रशंसा पाने की प्रतीक्षा नहीं करते। वे करके दिखावा नहीं चाहते। वे अपने आनंद के लिए कार्य करते हैं। यह बात और है कि उनका आनंद व्यक्ति का नहीं, समाज का होता है।

(क) वीरों की विशेषता होती है, वे— 1

(i) अपनी बात के पक्के पर निश्चय में देर करते हैं

(ii) अपनी बात एवं धुन के पक्के एवं निश्चयपूर्वक आगे बढ़ते हैं

(iii) अपनी बात, धुन एवं निश्चय के पक्के होते हुए अपना मार्ग स्वयं बनाते हैं

(iv) अपनी बात, धुन और निश्चय तीनों का ध्यान रखते हैं।

(ख) उनकी वीरता प्रकट होती है— 1

(i) उनके स्वरूप से **(ii)** उनके मन, आचरण और कर्म से

(iii) उनके आचरण से **(iv)** उनकी बहादुरी से।

(ग) वीर लोग मानव के रूप में खुद जन्म लेकर जंगल के उस पेड़ की तरह प्रकट होते हैं जिसका नाम है— 1

(i) देवदार **(ii)** पीपल

(iii) बरगद **(iv)** नीम।

(घ) वीरों को कभी अपेक्षा नहीं होती है— 1

(i) बड़े-बड़े तमगों की **(ii)** किसी के द्वारा की गई प्रशंसा की

(iii) वाद-विवाद द्वारा स्वयं को श्रेष्ठ ठहराने की **(iv)** जय-पराजय की।

(ङ) स्वयं के आनन्द के लिए कार्य करने वाले वीर लोगों का आनन्द होता है— 1

(i) मात्र स्वयं के लिए **(ii)** परिवार के लिए

(iii) स्वयं के साथ समाज और राष्ट्र के लिए **(iv)** स्वयं और मित्रों के लिए।